بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 21 फ़रवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

पेशगोई (भविष्य वाणी) मुस्लेह मौऊद के हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के सांसारिक विषयों पर विभिन्न विवेक पूर्ण लैक्चर्स एवं सम्बोधनों का परिचय।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-21.02.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि कल बीस फ़रवरी थी, यह दिन जमात में पेशगोई मुस्लेह मौऊद के हवाले से जाना जाता है। इस दिन अथवा इस हवाले से इन दिनों में आगे पीछे पेशगोई मुस्लेह मौऊद के जमातों में जलसे भी होते हैं। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक लम्बी पेशगोई है जिसमें एक बेटे के जन्म तथा उसके गुणों का वर्णन है। 20 फ़रवरी 1886 को इसको घोषण पत्र के रूप में प्रकाशित किया गया। इस पेशगोई में एक लड़के की विशेषताओं के बारे में अवतरित शब्दों का एक भाग इस तरह है कि वह अति बुद्धिमान तथा विवेकशील होगा, और फिर है कि वह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा। अल्लाह तआला ने इसके अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बेटा प्रदान किया जो इन विशेषताओं को रखता था, जिनका नाम बशीरुद्दीन महमूद अहमद है, इनको मुस्लेह मौऊद भी कहा जाता है।

जैसा कि पेशगोई के शब्द हैं कि वह लड़का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा, ख़ुदा तआला ने स्वंय उनके विवेक को रोशनी प्रदान की तथा ज्ञान से भर दिया। सांसारिक विषयों में आप रज़ी. अत्यन्त हीन थे परन्तु अल्लाह तआला ने आप रज़ी. से ज्ञान, व्यवस्था तथा दीन के ऐसे ऐसे काम करवाए कि बड़े बड़े शिक्षित लोग भी आपके सामने तिफ़्ले मकतब अर्थात बिलकुल बच्चे लगते हैं और आपका बावन वर्षीय ख़िलाफ़त का दौर इसका मुंह बोलता सबूत है। आपने विश्व के विभिन्न विषयों पर असंख्य भाषण दिए, निबन्ध लिखे, दीनी तथा क़ुरआनी ज्ञान

की तो कोई सीमा ही नहीं है। आपने सांसारिक समस्याओं, देशी एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर भी तक़रीरें कीं और निबन्ध लिखे। इतिहास से सम्बंधित बहुमूल्य निबन्ध लिखे और भाषण दिए। आर्थिक व्यवस्था एवं विश्व की विभिन्न व्यवस्थाओं, समाजवाद, साम्यवाद तथा पूंजीवाद का भी विश्लेषण किया और तक़रीर की, तथा बाद में यह पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित हो गई और यह जमाअत के लिट्रेचर में उपलब्ध है, यहाँ तक कि सैन्य शक्ति एवं सेनाओं की समस्याओं और ज्ञान विज्ञान के विषयों पर भी बुद्धि एवं विवेक की वे बातें बयान फ़रमाईं कि मनुष्य की बुद्धि चकित रह जाती है।

फ़रमाया मैं कुछ नमूने यहाँ पेश करूंगा जो केवल परिचय पर आधारित हैं। आप रज़ी. ने तुर्की का भविष्य तथा मुसलामानों का दायित्व शीर्षक पर एक सुझाव दिया और उसकी समीक्षा की, यह 1919 अर्थात आपकी ख़िलाफ़त के आरंभिक दौर की बात है, इसका परिचय इस प्रकार है कि मिल्लत की एकता के हरएक अवसर से पूर्णतः लाभान्वित होने के लिए हुज़ूर रज़ी. ने ऐसे समय पर जबकि तुर्की सरकार ख़तरे में थी, अत्यन्त विवेकशील नेतृत्व करते हुए 18 सितम्बर 1919 को यह पुस्तक लिखी। विभिन्न विचारधाराओं के मुसलमानों की एकता एवं अखंडता के लिए आप रज़ी. ने यह मार्ग दर्शक नियम बयान फ़रमाया कि इस जलसे का आधार (वहां तुर्की के बचाव में जलसा होना था) केवल यह होना चाहिए कि एक मुसलमान कहे जाने वाले शासन को हटा देना अथवा रियासतों का रूप देना, एक ऐसी क्रिया है जिसे हर एक समुदाय जो मुसलमान कहलाता है, ना पसन्द करता है तथा इसका विचार भी उसको कष्टदायक लगता है। तुर्की की भलाई के लिए आपने एक सुझाव यह भी दिया कि केवल जलसों एवं लेक्चरों से काम नहीं चल सकता, न रुपया जमा करके विज्ञापन एवं ट्रेकट प्रकाशित करने से, अपितु एक यथावत संघर्ष से जो दुनिया के समस्त देशों में इस बात के लिए किया जाए।

हुज़ूरे अनवर ने इस पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए फ़रमाया कि यही बात आज भी मुसलमानों को सोचनी चाहिए, यह तो केवल उस ज़माने में तुर्की शासन से इस बात का सम्बन्ध था, आज पहले से बढ़कर मुस्लिम दुनिया और अरब दुनिया को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि केवल नारे लगाने, मीटिंगें करने से कान नहीं बनेगा बल्कि व्यवहारिक क़दम उठाने पड़ेंगे। तुर्कों अथवा इसलाम के विरुद्ध द्वेष एवं पक्षपात का कारण बयान करते हुए इस परिस्थिति में बदलाव के लिए आपने यह मार्ग दर्शन किया कि मुसलमान अपनी गलतियों से तौबा करके ख़ुदा तआला की ओर झुकें और स्वं इसलाम को समझें और इसकी वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करें तथा दूसरों को अवगत करवाएँ ताकि वह दुर्भाग्य तथा संकट जो इस समय मुसलमानों पर आ रहा है, वह दूर हो। अतएव यही नियम आज भी मुसलमानों को ग्रहण करने की आवश्यकता है, अन्यथा इसलाम विरोधी दुनिया मुस्लिम देशों के चारों ओर घेरा तंग करती चली जाएगी, और कर रही है।

फिर एक अवसर आल पार्टीज़ कानफ्रंस का पैदा हुआ, उस पर आप रज़ी. ने 'आल पार्टीज़ कानफ्रंस के प्रोग्राम पर एक नज़र' के शीर्षक से निर्देश दिए। यह पम्फ़लेट हुज़ूर रज़ी. ने 13

जौलाई 1925 को लिखा। इस पम्फ़लेट में हुज़ूर रज़ी. ने पहले इसलाम की धार्मिक एवं राजनीतिक परिभाषा बयान फ़रमाई और मुसलमानों के समस्त सम्प्रदायों के सामने यह स्वर्णिम नियम पेश किया कि राजनैतिक मामलों में मुसलमान सम्पूर्ण एकता एवं अखंडता का प्रदर्शन करेंगे, क्यूँकि राजनैतिक दृष्टि से यदि आप किसी सम्प्रदाय को अलग कर देंगे तो यह कैसे सम्भव है कि वह अन्य सम्प्रदायों से सहयोग न करे। इसके बाद इसलाम की उन्नति एवं प्रगति तथा उसके राजनैतिक विकास के लिए कुछ सुझाव दिए। आप रज़ी. ने फ़रमाया कि शान्ति स्थापित करने के लिए एक दूसरे की आस्था में हस्तक्षेप न किया जाए, साहसिक विकास के साथ दूसरों को अपने अपने धर्म के अनुसार काम करने दें तथा स्वंय अपनी आस्था के अनुसार काम करें।

हुज़ूरे अनवर रज़ी. ने व्यापार एवं उद्योग के विषय में फ़रमाया कि व्यापार एक ऐसा विभाग है कि जिससे मुसलमान अत्यधिक मूर्छित रहे हैं और व्यवसायिक दृष्टि से वे हिन्दुओं के गुलाम बन कर रह गए हैं (उस समय यही स्थिति थी, आजकल इस मामले में दुनिया की सरकारों एवं व्यापारियों के हम गुलाम बन गए हैं, अतः इसकी ओर मुसलमान शासकों को ध्यान देने की आवश्यकता है)

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि कुछ मुस्लिम देशों में विशेषतः अहमदियों के लिए यह सोच कि ये काफ़िर हैं, वैसे तो हर सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को भी काफ़िर कहता है और गैर मुस्लिम दुनिया में इसी कारण से मुसलमानों के प्रति जो अनुचित सोच पैदा हो रही है, और यह बात मुसलमानों को हानि पहुंचा रही है। अतएव इस मूल बिंदु को आज भी मुस्लिम सरकारों और मुसलमानों को समझने की आवश्यकता है।

हिन्दुस्तान, पाक व हिन्द, की उस समय की स्थिति के बारे में एक गोल मेज़ कानफ्रंस हुई थी और उसमें मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का प्रश्न उठा था, हुज़ूर रज़ी. ने उस अवसर पर भी सरकार को सुझाव दिया था वे राजनैतिक दलों के प्रस्ताव के अनुसार प्रतिनिधि मंडलों का चयन करे ताकि कानफ्रंस के फ़ैसलों को लोग प्रसन्नचित होकर स्वीकार कर लें। फिर हिन्दुस्तान के उस समय की राजनैतिक समस्सया के समाधान के विषय में आप रज़ी. ने एक निबन्ध लिखा। हुज़ूर रज़ी. ने अपनी समीक्षा में मुसलमानों के अधिकार तथा आवश्यकताओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की तथा उसकी अनिवार्यता को स्पष्ट किया, इसके साथ ही आपने हिन्दुस्तान की राजनैतिक समस्सया का अत्यन्त बुद्धिसंगत एवं संतोष जनक समाधान पेश किया। इसके समृद्ध एवं अर्थपूर्ण समीक्षा का अंग्रेज़ी एडीशन प्रकाशित करवाने के लिए तुरन्त भिजवा दिया गया ताकि गोल मेज़ कानफ्रंस में शामिल होने वाले इसे पढ़ कर लाभ प्राप्त कर सकें। मुस्लिम प्रतिनिधियों को विशेष रूप से इसका लाभ मिला। हुज़ूर रज़ी. की यह किताब हिदुस्तान, इंगलिस्तान दोनों देशों में अत्यधिक लोकप्रिय हुई और इसे बड़े ध्यान पूर्वक एवं रुचि से पढ़ा गया, और कई राजनैतिक विशेषज्ञों तथा पत्रकारों ने शानदार शब्दों में हुज़ूर रज़ी. के प्रति सम्मान व्यक्त किया। तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने अह्मदिय्यत के इतिहास में उल्लिखित घटनाओं में से जो इस विश्लेष्ण के बारे में थे, कुछ नमूने पेश फ़रमाए। सर अब्दुल्लाह हारून एम.एल.ए. कराची कहते हैं कि मेरे विचार में

राजनैतिक मामलों की जितनी पुस्तकें हिन्दुस्तान के लिखी गईं हैं उनमें "हिन्दुस्तान के सियासी मसायल का हल" नामक पुस्तक अति उत्तम किताबों में से है।

फिर दुनिया की वर्तमान व्याकुलता का इसलाम क्या समाधान पेश करता है, इस बारे में भी आपने लिखा, आपने अंतर्राष्ट्रिय शान्ति को सम्मुख रखते हुए यह विवेकशील भाषण 9 अक्तूबर 1946 को देहली में इरशाद फ़रमाया।

दसतूरे इसलामी अथवा इसलामी आईन असासी (इसलाम का मूल संविधान) इस बारे में आपने अपने विचार प्रकट किए। यह लेक्चर साधारण जनता के लाभ के लिए 18 फ़रवरी 1948 को एक पम्फ़लेट के रूप में प्रकाशित किया गया। इस सबोधन में आप रज़ी. ने इसलाम के संविधान की व्याख्या करते हुए इस आयाम पर प्रकाश डाला कि यद्यपि शासन का आधार पूर्णतः इसलामी नहीं होगा, क्यूँकि वह हो नहीं सकता, किन्तु शासन के काम करने की विधि इसलामी हो जाएगी और मुसलमानों से सम्बंधित इसका क़ानून भी इसलामी हो जाएगा और इसलाम यही चाहता है। इसलाम कदाचित यह नहीं कहता कि हिन्दू और ईसाई और यहूदी को भी इसलाम के अनुसार चलाया जाए, बल्कि वह बिलकुल इसके विरुद्ध है।

फिर हुज़ूर रज़ी. ने रूस तथा वर्तमान युद्ध के हवाले से दित्तीय विश्व युद्ध में रूस का पोलैंड में प्रवेश होना, इसके ऊपर आपका विश्लेषण है। दित्तीय विश्व युद्ध के समय जब रूस पोलैंड में दाख़िल हुआ तो उस समय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने यह निबन्ध लिखा। हुज़ूर रज़ी. ने इस निबन्ध में रूस के पोलैंड में प्रवेश के उद्देश्य एवं कारणों की समीक्षा की। अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर भी आपकी गहन दृष्टि थी, इस सम्बन्ध में आपके और भी निबन्ध हैं। दीनी लिट्रेचर और तफ़सीरें अत्यधिक संख्या में हैं। जुमः के ख़ुत्बे और जमाअती जलसों तथा अन्य अवसरों पर संबोधन तो ज्ञान एवं विवेक का भण्डार है।

अतः अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भविष्य वाणी में जो वादा फ़रमाया था, उसे हर एक छोर से हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद रज़ी. में पूरा होता दिखाया, कुछ उदाहरण मैंने अभी आपके सामने दिए हैं। आप रज़ी. के ज्ञान एवं विवेक के इस लिट्रेचर को हमें पढ़ने का भी प्रयास करना चाहिए और अनेक ऐसी बातें हैं जो आजकल की परिस्थितियों में भी लागू हो रही हैं और इससे हम लाभान्वित हो सकते हैं, इसकी अल्लाह तौफ़ीक़ दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131